P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-9* December- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

हिन्दी साहित्य में हरियाणवी लोकगीतों का योगदान (कृषक जीवन के विशेष संदर्भ में)

मधुबाला
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
मद्रास

सारांश

लोकगीतों का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि ये बिना किसी लालच व शासकीय दबाव के लिखे जाते हैं। इन गीतों की रचना किसी शासक को प्रसन्न करने के लिए नहीं होती बल्कि ये लोकगीत जनमानस की चेतना का ही परिणाम होते हैं। इसलिए इन गीतों के माध्यम से कृषक जीवन के वास्तविक पहलुओं को देखा व समझा जा सकता है। ये गीत शायद पाठक को तुकबंदियाँ लगे परन्तु इन तुकबन्दियों में बड़े सीधे–सादे व सरल ढंग से कृषक समाज के कार्यों की विशद् चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द : लोकगीत, तुकबंदियाँ, जनमानस, पैदावार, अभिव्यक्ति, दुर्दशा।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में हरियाणवी लोकगीतों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हरियाणा हिन्दी भाषी राज्य है। इसकी भाषा और संस्कृति के उत्स महाभारत काल से पूर्व तक पहचाने जा सकते हैं। हरियाणवी लोकभाषा का इतिहास हिन्दी के विकास से जुड़ा हुआ है। आजकल शोधार्थी हरियाणवी लोकगीतों पर सहर्ष अनुसंधान करते हैं। यही नहीं, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में भी हरियाणवी लोकगीतों को सम्मिलित किया गया है। इस दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध करने में हरियाणवी लोकगीतों का अभूतपूर्व योगदान है। लोकगीतों का हरियाणवी लोक साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये लोकगीत नारी की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इनमें कृषकों के बारे में लिखने वाला कृषक नहीं है। कृषि, कृषक व उससे जुड़ी विभिन्न जानकारियाँ गैर कृषक लोगों द्वारा ही उपलब्ध करवाई गई है। ये स्त्रोत गैर कृषक समुदाय के कृषकों के प्रति दृष्टिकोण को दिखाते हैं। लेकिन कृषक स्वयं के बारे में क्या सोचते हैं और उन्हें कैसे अभिव्यक्त करते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है। कृषकों का स्वयं के जीवन, कृषि व्यवस्था व उनकी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण का वास्तविक दर्पण उनके द्वारा रचित लोक गीत हैं। जिनमें उनकी वास्तविक दशा झलकती है।

लोकगीत ऐसे ऐतिहासिक स्त्रोत की श्रेणी में आते हैं जिन पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। इन लोक गीतों के अध्ययन के माध्यम से हम समाज में घटित विभिन्न घटनाओं की वास्तविकता से रूबरू हो सकते हैं। इन लोक गीतों में घटनाओं की असत्यता व उनमें झूठे तथ्यों के मिश्रण की सम्भावनाएं कम होती हैं, क्योंकि ये गीत जनसाधारण की सीमित व स्पष्ट जानकारी का ही प्रतिफल होते हैं। इन लोकगीतों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि ये गीत बिना किसी लालच व शासकीय दबाव के लिखे जाते हैं। इन गीतों की रचना किसी शासक को प्रसन्न करने के लिए नहीं होती बल्कि ये लोकगीत जनमानस की चेतना का ही परिणाम होते हैं। इसलिए इन गीतों के माध्यम से कृषक जीवन के वास्तविक पहलुओं को देखा व समझा जा सकता है। ये गीत शायद हमें तुकबंदियाँ लगे परन्तु इन तुकबंदियों में बड़े सीधे–सादे व सरल ढंग से कृषक समाज के कार्यों की विशद् चर्चा हुई है।

इन गीतों के माध्यम से हरियाणा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, कृषि व्यवस्था, भूमि की उपजाऊ क्षमता, फसलें, कृषि औजार, कृषि करने में आने वाली कठिनाइयाँ, अकाल, धार्मिक दृष्टिकोण, त्यौहार, भोजन, वस्त्र, आभूषण, अच्छे जीवन यापन की लालसा, पशुधन की स्थिति, कृषक के कठोर जीवन व प्रकृति पर निर्भर जीवन की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है। ये गीत अधिकतर स्त्रियों द्वारा ही गाए गए है।

किसान की दुर्दशा का वर्णन करते हुए एक गीतकार ने बडा मार्मिक चित्रण किया है। गीतकार दिवाली के दिन किसान के घर की दयनीय अवस्था का उल्लेख करते हुए कहता है कि कार्तिक महीने की अमावस्या का दिवाली का

दिन है और कृषक के घर के हालात देखकर उसकी आंखों में आंसू आ गए हैं। वह आगे बताता है कि गांव के खुशहाल परिवारों में दिवाली के अवसर पर तरह–तरह के पकवान आदि बनाए जा रहे हैं परन्तु किसान का परिवार रोजमर्रा की भांति बासी भोजन से ही अपना पेट भर निर्वाह कर रहा है–

कात्यक बदी अमावस आई दिन था खास दिवाली का
आख्यां के म्हें आंसू आग्ये देख्या घर जद हाली का
सबी पड़ोसी बच्चां खात्तर खील खिलोने ल्यावें थे
दो बच्चे हाली के बैट्ठै उन की ओर लखावें थे
रात कूच की बची खीचड़ी घोल सीत में खावें थे
दो कुत्ते बैट्ठे मगन हुए उनकी और लखावें थे
तीन कटोरे एक बखोरा काम नहीं था थाली का
आंख्या कै म्हें आंसू आग्ये देख्या घर जद हाली का
कहीं कहीं तो खीर पके कहीं हलुवे की मंहकार ऊठ री
हाली री बहू एक ओड़ ने खड़ी बाजरा कूट री
हाली बैठ्या खाट बिछा कै पांयतांकानी टूट री
हुक्का भर कै पीवण लाग्या चिलम तलै तैं फूट री
चाकी धोरे डंडूक पड़ा था जर लाग्या एक फाली का
आंख्यां के म्हं आंसू आग्ये देख्या घर जद हाली का

हरियाणा की परम्परा में रिश्ते–नाते नाई द्वारा तय किए जाते थे। अतः एक कृषक स्त्री अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों से दुःखी होकर नाई को कोसती हुई कह रही है –

एक मेरे बाप के चार धीअड़ थीं,
चारों ब्याही चारों कूंट में
एक बागड़ में दूजी खादर में
तीजी हरियाणा चौथी देस में
मेरे सिर पर कागा हाथ भूआरी
भरूंट भूवारूं में खड़ी खड़ी
मैं सट सट मारूं डस डस
रोवूं नाई का तेरे जीव ने

किसान की फसल अगर अच्छी हो जाती है तो उसका श्रेय वह स्वयं न लेकर दूसरों को देता है। किसान उत्पन्न अनाज को देवी–देवताओं व संतों का आशीर्वाद मानता है साथ ही बैल व अन्य जीवों के भाग्य व मेहनत का परिणाम भी समझता है। प्रस्तुत गीत किसान के उदार ह्रदय को दर्शाता है।

धरती माता नै हर्यों कर्यो
गऊ के जाये नै हर्यो करयो
जीव जंत के भाग नै हर्यो कर्यो
ढाणा खेड़े नै हर्यो कर्यो
गंगा माई नै हर्यो कर्यो
जमना माई नै हर्यो कर्यो
धना भगत को हर तै हेत
बिना बीज उपजायो खेत
बीज वच्यों सो सन्तां नै खायो
घर भर आंगन भर्यो

एक अन्य गीत में एक किसान स्त्री गन्ने की अच्छी फसल होने की उम्मीद में अपनी खुशी को व्यक्त करते हुए इतराती है और उसने भविष्य के सपने संजोए हैं। फसल से प्राप्त धन से आभूषण पाने की इच्छा करती है व आभूषण चोरी होने पर परिवार के जिन लोगों द्वारा सताई जाती थी उनसे लड़ने की कल्पना को अभिव्यक्त करती हुई अपने मनोभावों को प्रकट करती हुई कहती है–

ईख नलाई के फल पाई
ईख नलाई मन्ने कंठी घड़ाई
ले गया चोर बहू के सिर लाई
सुसरा तै लडूंगी पीठ फेर कै लडूंगी
आजा हे सासड़ तन्ने डंडा तैं घडूंगी
जेठ तैं लडूंगी दिल खोल के लडूंगी
आजा हे जिठानी तेरा धान सा छडूंगी
देवर तै लडूं घूंघट खोल कै लडूंगी
आजा हे द्यौरानी तन्नै खूटिया धरूंगी
पड़ोसी तैं लडूंगी दिल खोल के लडूंगी
आजा हे पड़ोसन तन्नै पाड़ के धरूंगी
बालम तै लडूंगी महलां बैठी हे लडूंगी
आजा हे सोकन तेरा डंडा बित्ती घडूंगी

फसलों की पैदावार में आने वाली कठिनाईयों का उल्लेख भी गीतों में झलकता है। जैसे एक स्त्री गन्ने की फसल में लगने वाले समय व परिश्रम पर एक गीत में ईख को कोसती हुई कहती है कि ईख तूने मुझे बहुत सताया है। तेरी देख रेख के चक्कर में मैंने अपने रोते हुए बच्चे छोड़े, पीसना छोड़ा, दूध वाली गाय छोड़ी, कातना छोड़ा और यहाँ तक की मैंने तेरे लिए अपना मायका तक छोड़ दिया। देखिए एक स्थल पर –

बोहत सताई ईखड़े तन्नै बोहत सताई रे
बालक छोड्डे रोवते रै तन्नै बोहत सताई रे
डालड़ी में छोड्या पीसणा
अर छोड्डी सै लागड़ गाय
नगोड़े ईखड़े तन्नै बोहत सताई रे
कातनी में छोड्या कातना
अर छोड़ै सैं मां अर बाप
नगोड़े ईखड़े तन्नै बोहत सताई रे
बहोत सताई ईखड़े रे तन्नै बोहत सताई रे
बालक छोड्डे रोवते तन्नै बोहत सताई रे

एक अन्य गीत में सम्वत् 1917 के अकाल का विवरण मिला है। अकाल के आरम्भ में जुलाहे काल का ग्रास बने फिर तेली व उसके बाद बनिये पर भी इसका प्रभाव पड़ा। रुपए की कीमत गिर गई। चने व गेहूं के भाव आसमान छूनें लगें–

पड़ते अकाल जुलाहे मरे, और बीच में मरे तेली
उतरते अकाल बनिये मरे, रुपये की रहगी धेली
चणा चिरौंजी हो गया, अर गेहूं होगे दाख
सत्रह भी ऐसा पड़ा, चालीसा का बाप

सम्वत् विक्रमी 1934 के अकाल के समय हालात बद से बहत्तर हो गए थे। बैल रोटी के भाव बिकने लगे और ऊंट के दाम भी रुपए से पैसे पर आ गए और गाय भैंस का तो वंश ही खत्म होने की कगार पर आ गया। सम्वत् 1934 के भयंकर अकाल के दौरान 34 जातियों का विनाश हुआ केवल कसाई व साहुकार बचे। इन सभी तथ्यों का विवरण करते हुए लेखक कहता है–

एक रोटी को बैल बिका
अर पैसा बिक गया ऊंट
चौंतीसा नै खोदिया भैंस गाय का बंट
चौंतीसा ने चौंतीसा मारै जिये वेश कसाई

औंह मारैं तकड़ी अर उस ने छुरी चलाई

इन लोक गीतों में न केवल किसान की दुर्दशा का विवरण मिलता है बल्कि पशुओं की व्यथा भी मिलती है। जैसे एक बुढ़ा बैल अपने मालिक किसान से फरियाद करता हुआ कहता है कि मैंने अपनी यौवनावस्था में तुम्हारे लिए भरपूर परिश्रम किया और अब जब मैं कार्य करने लायक नहीं रहा तो तुम मुझे बेचने की सोच रहे हो। देखिए बैल की मनोदशा –

अरे न्यूं रोवै बुड्ढा बैल, मन्नै मत बेच्चै रे पापी
तेरे कुआं कोल्हू में चाल्या नाज कमा कै तेरे घरां घाल्या
इब्ब तन्नै करली सै बज्जर की छाती
तिरा बंज्जड़ खेत मन्नै तोड़्या, गाड्डी तैं मुंह ना मोड़्या
इब्ब तै मेरी बेच्चै से माटी

अध्ययन का उद्देश्य

1. हरियाणवी लोकगीतों का परिचय
2. लोकगीतों के माध्यम से कृषक जीवन की अभिव्यक्ति
3. हिन्दी साहित्य में लोकगीतों का महत्त्व
4. लोकगीतों में नारी की भूमिका

साहित्यावलोकन

ओमप्रकाश कादयान, हरियाणा के लोकगीत, भाग–2 में लेखक ने बताया है कि हरियाणा के लोग वीर, कर्मठ, ईमानदार, संघर्षी व प्रकृति प्रेमी रहे हैं। इसी कारण यहाँ का लोकसाहित्य भी समृद्ध रहा है। इतना समृद्ध कि वह अपने में यहाँ कि लोककला संस्कृति, राष्ट्रभक्ति भावना, परम्पराएं, रीति–रिवाजों, गौरवशाली इतिहास सब समेटे हुए हैं। लोक धारणा के अनुसार यदि वेद ईश्वर प्रदत्त हैं तो 'लोक साहित्य' धरती से प्रसूत है।

डॉ. साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत में लेखक का मानना है कि इन लोकगीतों का महत्त्व हमारे जीवन में एक और दृष्टि से भी है, जो लोग सविध शिक्षा प्राप्त करके अपने आप में सभ्य, पंडित एवं अभिजात होने का अभिमान उत्पन्न कर लेते हैं, लोकतांत्रिक एवं समाजवादी मूल्यों के अनुसार वे लोग तो असामाजिक तत्त्व हैं। लोक राज के युग में लोकसाहित्य को ही आदर एवं प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोक गीतों में लोकमानस की प्राचीनतम संस्कृति व सभ्यता का अस्तित्व विद्यमान है। लोकगीत संगीतमयी रचना होते हैं। क्योंकि इनमें लय की प्रधानता होती है। लोक गीत विशुद्ध रूप से लोकमानस की धरोहर हैं, इनको गहराई से समझने के लिए लोक मन के भीतर गहरे में उतरना होगा। लोकगीतों में मधुर स्वरों की लय पर उसके अन्तर से उल्लास व विरह की भावनाएं ही प्रभावित होती हैं। इस प्रकार के गीत अनाम होते हैं, ये किसी एक व्यक्ति या औरत द्वारा नहीं, बल्कि लोक द्वारा निर्मित होते हैं, जिनमें नित्य नई–नई टहनियाँ, कोपलें व फल–फूल लगते रहते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2003*
2. *ओमप्रकाश कादयान, हरियाणा के लोकगीत, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, भाग–2, 2012*
3. *प्रो. लालचन्द गुप्त 'मंगल', (सम्पादक), हरियाणा का हिन्दी साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2006*
4. *डॉ. रामनिवास 'मानव', हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य कृति प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999*
5. *डॉ. बाबूराम, हरियाणवी भाषा और साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला 2011*
6. *डॉ. ओमप्रकाश भारद्वाज, हरियाणवी लोककाव्य में सौन्दर्य चेतना, हस्ताक्षर, कुरुक्षेत्र 1983*
7. *डॉ. भीमसिंह मलिक, हरियाणा लोकसाहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1990*
8. *हरियाणवी लोकगीत–म्हारा हरियाणा, www..mharaharyana.com 2017*
9. *डॉ. संबोध गोस्वामी, हरियाणवी लोकगीतों में नारीवादी चेतना, अपनी माटी, (साहित्य और संस्कृति की मासिक ई–पत्रिका) फरवरी, 2014*
10. *कला ही जीवन को वास्तव में जीवन्त बनाती है, vskbharat.com 2017*